हूं कि आपने दिल्ली एडमिनिस्ट्रेशन को क्या यह बताया है कि आल इंडिया मेडिकल इंस्टीटयूट की तरफ से आप दिल्ली के अंदर आयुर्वेद और यूनानी का एक बहुत बड़ा संस्थान खोलना चाहते हैं । अगर दिल्ली एडमिनिस्ट्रेशन को यह बात बतायी जाय कि आयुर्वेद और यूनानी का भी इस तरह का एक उच्च स्तरीय संस्थान खोलने का विचार है तो मैं समझता हूं कि दिल्ली एडमिनिस्ट्रेशन को अपने विचार बदलने में सहायता मिलेगी । यह भी मैं जानता हूं कि आपने इस बात को कहा या नहीं और दूसरी बात यह भी कि जिस तरह से आप अध्यापकों से बात कर रहे हैं । इन, जिन बच्चों का भविष्य बनना है और जो परेशान हैं, जिनके लिये दिल्ली के विश्वविद्यालय के उप कुलपति ने यह कहा है कि इन विद्यार्थियों के शिक्षा का स्तर संभालने के लिये कम से कम वहां पर 80 अध्यापक होने चाहिये जो आयुर्वेद और यनानी की शिक्षा दें। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि दिल्ली विश्वविद्यालय की रिकमेंडेशन के बाद 80 के बजाय केवल 18 अध्यापक वहां हैं । इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि शिक्षा का स्तर उनका कितना गिरेगा । इसीलिये उन विद्यार्थियों का भविष्य संभालने के लिये मैं अनुरोध करना चाहता हूं, स्वास्थ्य मंत्री जी से कि आप विद्यार्थियों से पूछें, दिल्ली एडमिनिस्ट्रेशन को बुला कर यह कहे कि आप केवल अपने निहित स्वार्थ के लिये यह बात न करें कि कुछ अध्यापकों को और आप रख देंगे या कुछ इसी प्रकार होगा । बल्कि होना यह चाहिये कि आप उनको यह समझाइये जो बात आपने राज्य सभा में कही है कि एक बहुत विशाल स्तर का संस्थान आयुर्वेद और यूनानी का बनने जा रहा है । इसलिये वह उसे सेन्ट्रल गवर्नमेंट को हैण्ड ओवर कर दें । अगर आप ऐसा कर देंगे तो विद्यार्थी भी संतुष्ट होंगे और अध्यापकों का भी भविष्य संभलेगा ।

श्री राजनारायण : श्रीमन्, मैं शास्त्री जी से पुनः विनम्रता के साथ निवेदन करना चाहता हूं कि विद्यार्थियों से एक बार नहीं 10 बार मैं मिला । मैं तिबिया कालेज मे स्वयं गया हुआ भी था और अपने स्वास्थ्य मंत्रालय में उनके प्रतिनिधियों को बुला कर अनुनय विनय की और अब भी मैं उनसे अनुनय विनय कर रहा हूं कि, भाई साहब आप जरा दिल्ली प्रशासन में, जब वह इसको लेकर चलना चाहते हैं तो मौका दें और देखें कि वह चलना चाहते हैं या नहीं, चलेंगे कि नहीं । दिल्ली प्रशासन के श्री के० एन० साहनी साहब और स्वास्थ्य मंत्री श्री खुराना साहब और हमारे जितने सेक्रेटरीज थे उन सब लोगों की हमने कान्फ्रेंस अपने दफ्तर में बुलायी और करीब करीब दो घंटे सब में विचार विनिमय हुआ । विचार विनिमय के बाद यह बात 18 और 19 जुलाई की है, वहां पर साहनी साहब ने यह कहा कि आज आप कोई फैसला मत लीजिये हमको जरा अपनी बैठक बुला लेने दीजिये ताकि पूरी बैठक को बुला कर बात सामूहिक ढंग से तय की जा सके । इस के बाद हमने कहा कि, हां, यह ठीक है जनतंत्रीय ढंग से कोई भी फैसला होना चाहिये । जब वे गए, 20 तारीख को उन्होंने जब बैठक की—और उसकी रिपोर्ट 21 तारीख के समाचारपत्र में माननीय सदस्यों ने पढ़ी होगी—फिर हमने उनको टेलीफोन किया कि आप का जो रिजोल्यूशन है उस को आप कृपा कर के हम को भेज दें । तो यह उनके सचिव की ओर से पूरी आई है कि हम चाहते हैं कि इस को दिल्ली एडमिनिस्ट्रेशन ही अपने हाथ में ले, हम केन्द्र से अनुदान चाहेंगे । तो दिल्ली प्रशासन को अच्छी तरह से हम ने समझाया, जब स्वास्थ्य मंत्रियों का सम्मेलन हुआ था तो हम लोगों ने अपनी भावना व्यक्त की थी कि आल इंडिया इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइन्सेज जो है, उसके स्तर का आयुर्वेदिक और यूनानी पद्धति का हम आल इंडिया इंस्टीट्यूट कायम करे और हमारी भावना है, इच्छा है—संदिच्छा है—कि इस तरह की चीज यहां हो। उन लोगों

ने कहा कि वह हम भी कर सकते हैं, हम को उस ढंग से केन्द्र अनुदान दे तो . . .

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : तो मेडिकल इंस्टीट्यूट भी उन्हीं के हवाले कर दीजिए ।

श्री राजनारायण : सुना जाए । मेडिकल इंस्टीट्यूट तो शरू से ही केन्द्रीय पैंसे से चल रहा है, केन्द्रीय सरकार ने बनाया हुआ है । दोनों को तुलना में मत रखिए । दोनों की स्थिति भिन्न है, आल इंडिया मेडिकल इ स्टीट्यूट की और तिब्बिया कालेज की । मेडिकल इस्टीट्यूट पहले से है केन्द्र के पास और तिब्बिया कालेज को लेना है । तिब्बिया कालेज दिल्ली एडमिनिस्ट्रेशन के अन्तर्गत है; वह दिल्ली यूनिवर्सिटी से भी संबंधित है . . .

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : तिब्बिया कालेज का एक पथक् प्रश्न था । आपको शायद पृष्ठ भूमि की जानकारी नहीं है ।

श्री राजनारायण : बिलकुल मालूम है । कोई पृष्ठभूमि ऐसी नहीं है जिस पृष्ठ भूमि पर हमारा ध्यान न गया हो । मगर मैं बहुत थोड़े में कहना चाहता हूं कि पृष्ठ भी जानता हूं और भूमि भी जानता हू इसलिए पृष्ठभूमि की तरफ शास्त्री जी अब खेद ध्यान दें, इस बात की तरफ ध्यान दें कि दिल्ली एडमिनिस्ट्रेशन का अभी नया-नया चनाव हुआ है, उनको जिम्मेदारी से काम करने की शक्ति, कुव्वत और उदारता है और वह चाहते है कि हम भी क्षमता रखें कि बड़े पैमाने पर इस्टीट्यूट चलाएं; हम तो चाहते है हर राज्य का एक-एक इस्टीट्यूट चले । तो उसमें क्या बुरा है अगर दिल्ली एडमिनिस्ट्रेशन बड़े पैमाने पर आयुर्वेद और यूनानी को विकसित करने के लिए उस तिब्बिया कालेज को चलाना चाहता है अपने हाथ में लेकर । तो हम समझते है केन्द्र को इसमें कोई आपत्ति नहीं करनी चाहिए, सम्मानित सदस्यों को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए, विरोध पक्ष को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए, माननीय श्री प्रकाशवीर शास्त्री को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए. . . .

SHRI JAGJIT SINGH ANAND: He should give a direct answer. The time of the House is being wasted.

श्री राजनारायण : इसलिए मैं शास्त्री जी से कहना चाहता हू कि आप इसमें हमारी मदद कीजिए और हमारी मदद करके उन बच्चों को गुमराह मत कीजिए; उनसे कहिए कि वे धरना उठा लें और हमको मौका दें क्योंकि जब तक वे धरना करते रहेंगे और बैठे रहेंगे धरने पर तब तक इस सबध में मैं कोई कदम उठाने के लिए तैयार नहीं हू । न तो मैं उन बच्चों से बात करूगा और न दिल्ली प्रशासन से भी बात करूंगा उनका धरना उठेगा तो मैं दिल्ली प्रशासन के पास स्वत: पहुच जाऊंगा उन के प्रस्ताव को लेकर कि इस प्रस्ताव के मुताबिक भाई साहब, आप क्या करना चाहते है, क्या कर रहे हैं । मगर वे चाहेंगे कि धरना, हल्ला-गुल्ला, ढोल और कनस्तर बजा कर. . . . (*Interruption*) हल्ला मत करिए । मैं कम्युनिस्ट पार्टी को खूब जानता हू । तो मेरा यह कहना है कि हल्ला करके हमको कोई दबा नहीं सकता । बुद्धि से, विवेक से बात होनी चाहिए, यहां हल्ला करने की बात नहीं होनी चाहिए । तो मेरा निवेदन यह है कि शास्त्री जी, प० कमलापति त्रिपाठी जी, विरोध पक्ष के सम्मानित सदस्यों से कि इस समस्या को ठीक तरीके से सुलझाने के लिए आप बच्चों को साधु सम्मति दें कि धरना देने से काम नहीं चलेगा । वे धरना उठाएं और तब हम बाकायदा उनके साथ चलेंगे और साहनी जी से, सब लोगों से बात करेंगे और बात करके जनतंत्रीय प्रणाली को अख्तियार करके तिब्बिया कालेज के मसले को हल किया जाएगा । यह सरकार किसी मसले को टालना नहीं चाहती है, समस्या को हल करना चाहती है ।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : उपसभापति जी मेरा तो सीधा सा प्रश्न यह था कि . . .